



# बाढ़ते कदम

वर्ष-16  
अंक-03  
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

कहानी विशेषांक

# भारत के संविधान में राजभाषा

## राजभाषा संकल्प, 1968

संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित निम्नलिखित सरकारी संकल्प आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है –  
**संकल्प**

“जबतक संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार, वृद्धि करना और उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है :

**1.** यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी और सब राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।

**2.** जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी के अतिरिक्त भारत की 21 मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया गया है, और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाय किए जाने चाहिए :

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के साथ-साथ इन सब भाषाओं के समन्वित विकास हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हो और आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।

**3.** जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा देश के विभिन्न भागों में जनता में संचार की सुविधा हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किए गए त्रि-भाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णतः कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी किया जाना चाहिए :

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा के, दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए, और अहिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

**4.** और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जाए

यह सभा संकल्प करती है कि-

(क) कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा अथवा पद के कर्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन हेतु केवल अंग्रेजी अथवा केवल हिंदी अथवा दोनों जैसी कि स्थिति हो, का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए, संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिंदी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यतः होगा; और

(ख) कि परीक्षाओं की भावी योजना, प्रक्रिया संबंधी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक सेवा आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी।”

## विषय वस्तु

प्रसंगवश—

— सुधांशु कुमार विश्वास — 3

भारतीय रेल के...—

— रीतेश कुमार सिंह 4

जेठ का व्यवहार

— विजय कुमार तिवारी 6

मां का अधिकार—

— सुप्रिया राय 9

चैल —

— नितेश कुमार 13

गहरी चोट का असर

— विकास कुमार 14

बरखा बहार —

— सोनम 18

चित्र विथिका 19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं  
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

## संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय

पूर्व रेलवे/मालदा

फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – rajbhasha.malda@gmail.com

महिला उत्पीड़न  
और समाज

हमारे सामाजिक मूल्यों में बड़ी गिरावट आई है। समय के साथ-साथ यह गिरावट पहले से भी तेज होती जा रही है। लोगो की मानसिकता पहले से अधिक मजबूत हुई है जो महिलाओं को भोग की वस्तु की तरह दिखती है। पुरुष प्रधान समाज में माना जा रहा है कि महिलाएं महज सुख के लिए ही हैं, उनके साथ जोर जबरदस्ती जैसा बर्ताव करना जायज है।

जबकि हमारे पास इसे रोकने के लिए कानून हैं और अदालत के द्वारा विशेष दिशा निर्देश भी जारी किए गए हैं। हाल के वर्षों में कई सारे आयोग गठित हुए हैं जो महिलाओं की सुरक्षा के लिए बने हैं जो समाज में अपराध को रोकने के लिए बनाए गए हैं। लेकिन यह सच बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है कि महिलाओं के साथ दुष्कर्म की घटनाओं में वृद्धि देखी जा रही है। उनके साथ अन्याय के अन्य मुद्दे तो हैं ही जिसमें घरेलू हिंसा से लेकर दहेज उत्पीड़न कार्य क्षेत्र में बदसलूकी, एसिड से हमला आदि हैं।

पुलिस प्रशासन द्वारा सही दिशा में सार्थक प्रयासों से ही यह संभव होगा और यह प्रयास होना चाहिए कि समाज में कानून का भय पैदा किया जाए। यही आज के समय की मांग है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में यदि समाज नहीं बदल रहा है तो उसे कानून की शक्ति से बदलने का काम किया जाता है। इतिहास का गवाह रहा है लेकिन अफसोस की बात यह है कि कानून लागू करने वाले लोग इसे लेकर कोताही बरतते हैं।

आवश्यकता है कि समाज की इस निम्न मानसिकता को बदलने की। जाहिर है यह बदलाव हमें अपने अंदर से आना चाहिए। समाज को खुद बदलना होगा तब जाकर कहीं महिला स्वतंत्र होकर घूम पाएगी। कानून को लागू करने वाले तमाम महकमों में मौजूद अधिकारियों के मन में यह भाव रहता है कि महिलाएं ही अपने खिलाफ हो रहे अपराध के लिए जिम्मेदार हैं। यह सोच कानून व्यवस्था को धराशाई कर देती है और फिर गलतियों, चूकों, और लापरवाहियों का अंतहीन दौर शुरू हो जाता है।

समाज में महिलाओं के प्रति होने वाले अत्याचार में कमी आनी चाहिए इसके लिए हमें मिलकर प्रयत्न करना होगा। — सुधांशु कुमार विश्वास

## निःशुल्क वितरण हेतु

## संरक्षक

मोहित सिन्हा  
मंडल रेल प्रबंधक

## परामर्श

विजय कुमार साहू  
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी  
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

## प्रधान संपादक

सुधांशु कुमार विश्वास  
राजभाषा अधिकारी(प्रा.)

## संपादक

सच्चिदानंद  
व. अनुवादक

## कार्यकारी संपादक

कैलाश चंद्र धारिया  
व. अनुवादक

## सहयोग

इंद्र ज्योति राय, क. अनुवादक  
दयामय दास, क इंजी.

# भारतीय रेल के कुछ रोचक तथ्य

भारतीय रेलवे, एशिया के सबसे बड़े रेलवे नेटवर्क के रूप में जाना जाता है। यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है जो एक ही मैनेजमेंट के अंतर्गत चलाया जा रहा है। हर दिन करीब 12,617 ट्रेनों पर 23 लाख यात्री सफर करते हैं। भारतीय रेल ट्रेक की कुल लंबाई 64 हजार किलोमीटर से ज्यादा है। वहीं अगर यार्ड, साइडिंग्स वगैरह सब जोड़ दिए जाएं तो यही लंबाई 1 लाख 10 हजार किलोमीटर से भी ज्यादा हो जाती है।

## आईए जानते हैं भारतीय रेल के कुछ रोचक तथ्यों के बारे में—

### सबसे पहली हाई स्पीड ट्रेन :

विदित हो कि वर्ष 2014 में प्रति घंटे 160 किलोमीटर की दर से ट्रेन चलाने के लिए एक सफल परीक्षण हुआ था। इसके कुछ महीनों बाद फिर सेमी हाई स्पीड ट्रेन 'गतिमान एक्सप्रेस' का परीक्षण हुआ। इस ट्रेन ने मात्र 90 मिनट में दिल्ली और आगरा के बीच की दूरी पूरी की थी और इस दौरान करीब 30 मिनट की बचत की गई।

### सबसे तेज और धीमी चलने वाली ट्रेन :

नई दिल्ली-भोपाल शताब्दी इस समय सबसे तेज चलने वाली शताब्दी ट्रेन है। यह 150 किमी प्रति घंटे के हिसाब से फैजाबाद से आगरा पहुंचती है। इसके अलावा मेट्रोपलियम-ऊटी नीलगिरी पैसेंजर ट्रेन देश की सबसे धीमी चलने वाली ट्रेन में है। यह 10 किलोमीटर प्रति घंटे के हिसाब से चलती है। भारतीय रेलें दिन भर में जितनी दूरी तय करती हैं, वह धरती से चांद के बीच की दूरी का लगभग साढ़े तीन गुना है।

### गिनीज रिकॉर्ड बुक में :

इंडियन रेलवे के नई दिल्ली रेलवे स्टेशन को दुनिया के सबसे बड़े रूट रिले इंटरलॉकिंग सिस्टम के लिए गिनीज बुक्स में जगह मिली है।

जुलाई 1986 में भारतीय रेल मंत्रालय ने कंप्यूटर पर भारतीय रेलवे की हर जानकारी और गतिविधि के लिए CRIS और ICRS जैसे संस्थानों की स्थापना की गई थी। इसके करह की घटना के बाद रेलवे के कंप्यूटरीकरण की शुरुआत की गई थी और इसकी तेजी से कंप्यूटरीकरण को भी बढ़ावा मिला।

### भारतीय रेलवे का शुभंकर

भोलू हाथी है, जिसको रेलवे ने गार्ड के रूप में दिखाया है। यह शुभंकर एक हाथी का कार्टून है, जो अपने हाथ में एक ग्रीन लैंप लिए हुए है। इसको रेलवे के द्वारा 150 साल पूरा होने पर 16 अप्रैल 2002 को बेंगलुरु में प्रदर्शित किया गया था। इसके एक साल बाद रेलवे ने साल 2003 में भोलू को आधिकारिक तौर पर अपना शुभंकर घोषित किया।

भारतीय रेलवे स्टेशन में सबसे छोटा नाम ओडिशा का इब (IB) रेलवे स्टेशन है जो सिर्फ दो शब्दों का है। वहीं सबसे बड़े रेलवे स्टेशन के नाम के रूप में वेंकट नरसिंह राजुवारिपटा रेलवे स्टेशन है। इस नाम में कुल 29 अक्षर हैं।

दुनिया का सबसे पुराने स्टीम इंजन से चलने वाली ट्रेन फेयरी क्वीन नई दिल्ली और राजस्थान के अलवर में चलती है। यह दुनिया का सबसे पुराना भाप वाला इंजन है। इस इंजन का नाम भी 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में शामिल

### 111 जगह रुकती ये ट्रेन :

हावड़ा-अमृतसर एक्सप्रेस 111 स्टॉपेज पर रुकती है।

इसके अलावा दुनिया का सबसे लंबा 1366.33 मीटर का प्लेटफॉर्म गोरखपुर में है। इसके अलावा भारतीय रेलवे दुनिया का 9वां सबसे बड़े नियोक्ता के रूप में भी जाना जाता है।

### बिना रुके सबसे लंबी दूरी तक चलने वाली ट्रेन :

त्रिवेंद्रम-हजरत निजामुद्दीन राजधानी एक्सप्रेस बिना रुके सबसे लंबी दूरी तक चलने वाली ट्रेन है। यह ट्रेन 528 किलोमीटर (वडोदरा और कोटा) के बीच का सफर बिना रुके तकरीबन 6.5 घंटे में पूरा करती है।

### चिनाब रेल ब्रिज दुनिया का सबसे ऊंचा रेल ब्रिज :

जम्मू कश्मीर के रियासी जिले में चिनाब नदी पर बना रेलवे ब्रिज यह दुनिया का सबसे ऊंचा रेल ब्रिज है। यह ब्रिज दिल्ली के कुतुबमीनार से पांच गुना ऊंचा और फ्रांस के एफिल टावर से भी ऊंचा होगा। 1315 मीटर लंबा यह अंडर कंस्ट्रक्शन ब्रिज चिनाब नदी पर बक्कल और कौरी के बीच बनाया जा रहा है। यह 2016 में बनकर तैयार होगा।



### आईआरसीटीसी के हिट्स 12 लाख प्रति मिनट तक :

भारतीय रेलवे की सहयोगी संस्था इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉर्पोरेशन (IRCTC) को एक मिनट में 12 लाख हिट्स मिले थे। वहीं, 1 अप्रैल, 2015 को ऑनलाइन ट्रेन टिकट की बुकिंग के दौरान यह संख्या करीब 13.45 लाख प्रति मिनट के करीब पहुंच गया था।

### भारतीय रेलवे के 4 साइट वर्ल्ड हेरिटेज में :

यूनेस्को ने भारतीय रेलवे के 4 साइट को वर्ल्ड हेरिटेज साइट के तौर पर शामिल किया है। यूनेस्को की सूची में दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे को 1999 में, मुंबई सीएसटी बिल्डिंग को 2004 में, नीलगिरि माउंटेन रेलवे को 2005 में और कालका-शिमला रेलवे को 2008 में शामिल किया गया।

### दो राज्यों में बनी नवापुर रेलवे स्टेशन की बिल्डिंग :

भारतीय रेलवे का नवापुर रेलवे स्टेशन दो राज्यों में बना हुआ है। इस रेलवे स्टेशन का पहला आधा हिस्सा महाराष्ट्र में है, जबकि दूसरा आधा हिस्सा गुजरात में है।

### बुलेट ट्रेन की शुरुआत

इसी वर्ष अपने देश में बुलेट ट्रेन चलाने का उद्घाटन हुआ है जो 2022 तक चलना आरंभ करेगी।

— रीतेश कुमार सिंह

# जेठ का व्यवहार

सुभद्रा के डोली पर चढ़ते समय उसकी मां ने कहा था-“ बेटी, अपना, अपना ही होता है, ससुराल में तुम्हारा बस पति ही अपना है और उसे कस कर पकड़ना..। पति तुम्हारी मुट्ठी में रहेगा तो समझो, तुम हमेशा सुखी रहोगी।”

मायका छोड़ कर जाती हुई सुभद्रा ने मां की बातों को वेद मंत्र मान कर अपने हृदय के सबसे सुरक्षित कोने में छिपा लिया। उसे ससुराल में अपने पति को बस में करने में कोई खास मशक्कत नहीं करनी पड़ी। वह तो पहले से ही रूप का लोभी था जो सुभद्रा की सुंदरता को देख कर दुम हिलाने लगा था।

सुभद्रा की सास आरती देवी स्वभाव से बड़ी ही नेक एवं उदार चित्त वाली महिला थीं। उनको दो बेटे अर्जुन एवं मनीष और एक बेटी राधा थी। राधा यद्यपि मनीष से छोटी थी पर उसकी शादी पिछले साल ही हो गई थी। अब की बार वह अपनी ससुराल से अपने बड़े भाई मनीष की शादी के अवसर पर मैके आई थी।

राधा जब अपने ससुराल जाने लगी तो सुभद्रा ने देखा कि राधा को काफी सामान दिया जा रहा है। सबसे बड़ा भाई अर्जुन और मां घर का कोई सामान देने में संकोच नहीं कर रहे हैं। इस अवसर पर उसके मैके से जो कुछ मिला था, उसमें से भी काफी कुछ सामान दे दिया गया।

सुभद्रा उस समय तो कुछ नहीं बोली। बोलती भी कैसे! नई नवेली दुल्हन जो थी। पर उसके मन में गांठ पड़ गई कि ससुराल में पति के सिवा कोई अपना नहीं है। बहुत सा वैसा सामान भी राधा को दिया गया, जिसे सुभद्रा की मां ने बड़े प्रेम से खरीद कर अपनी बेटी के लिए दिया था।

सुभद्रा के पिता किसी विभाग में बड़े अधिकारी थे। पर घर में उनका स्वभाव पत्नी के सामने बड़ा ही दबू था। वह पत्नी के सामने अपनी जबान मुश्किल से ही खोल पाते थे। सुभद्रा बचपन से ही अपनी मां के इस व्यक्तित्व को देखती आ रही थी। वहां मां का ही राज चलता था। सुभद्रा का कोई दूसरा भाई-बहन नहीं था।

उसने बचपन से लेकर अपनी शादी के पहले तक अपने घर में सौगातों का बस आना ही देखा था। वहां से कभी किसी को कुछ देते हुए नहीं देखा था। उसके पिता को रिश्तत में काफी कुछ मिलता था, जो हमेशा उसके यहां आता रहता था। उसमें से बहुत कुछ भले ही बर्बाद हो जाता था, पर मां की उग्रता के कारण वह किसी दूसरे के लिए लाभदायक नहीं हो पाता था।

एकल परिवार होने से संयुक्त परिवार के गुण उसके आस-पास भी नहीं थे। अपनी शादी में आई अपनी छोटी ननद को अपना सामान दिया जाता देख कर उसके गुस्से का पारावार नहीं रहा। मगर लोक-लाजवश कुछ भी कह नहीं पाई। इस घटना का उस पर काफी असर हुआ। उसे अपनी मां की नसीहत की सच्चाई नजर आई। वह समझ गई कि उसका इस घर में वास्तव में कोई अपना नहीं है।

अर्जुन को दो लड़के थे। दोनों की उम्र अभी कुछ खास नहीं थी। छोटा लड़का अमित बातें तो बहुत प्यारी-प्यारी करता था, पर था थोड़ा नटखट। वह दिन भर धमा-चौकड़ी करता, जिससे घर के कई सामान टूट फूट जाया करते थे। एक दिन वह हाथ में क्रिकेट खेलने वाला बैट लेकर अपनी चाची के घर में घुसा।

सुभद्रा पलंग पर बैठी कोई पत्रिका पढ़ रही थी। उसका ध्यान किसी कहानी के कथानक में उलझा था कि एक जोरदार आवाज के साथ उसका मैके से आया हुआ आदमकद शीशा टुकड़ों में टूट कर बिखर गया। उसकी नजर जब शीशे की तरफ गई तो वह गुस्से से पागल हो गई।

अमित किसी छुईमुई की तरह संकोच में पड़ा खड़ा था। वह चाची के गुस्से से भली-भांति परिचित था। लेकिन वह अब क्या करता! उसने तो ऐसे ही बैठ घुमा कर हवा में गेंद मारना चाहा था।

सुभद्रा पलंग से उतरी और धमाधम अमित को पीटने लगी। अमित चिल्लाने लगा। उसकी चिल्लाहट सुन कर आरती देवी दौड़ी हुई आई। सुभद्रा ने शायद उन्हें देखा नहीं और गुस्से में अमित का रोना देख कर एक जोरदार लात जमा दिया।

पांच बरस के बच्चे की क्या बिसात? वह धड़ाम से उन टूटे हुए कांच के टुकड़ों पर गिर पड़ा। आरती देवी ने अपनी तीन संतानों को कभी थप्पड़ से भी नहीं मारा था। अमित को लात से मारते देख उनका खून खौल उठा।

उन्होंने सुभद्रा को बुरा-भला कहते हुए दौड़ कर अमित को उठाया। अमित के कांच पर गिर जाने की वजह से उसे एक-दो जगह कट गया था। खून की कई बूंदें कटे स्थानों से निकलने लगी थीं।

अमित रोते हुए चला गया। पर सुभद्रा को जब होश आया तो समझ में आया कि उसने कुछ गलत कर दिया है। पर उसके स्वभाव में ही उग्रता थी। इसलिए उसे उसका कुछ खास मलाल नहीं रहा। वह थोड़ी ही देर में ही पुनः अपनी स्थिति में लौट आई।

इस बात का थोड़ा-बहुत असर जरूर पड़ा, पर मामला शांत पड़ गया। सुभद्रा इस बात से थोड़ा साहसी हो गई। वह अब धीरे-धीरे घर के अन्य कार्यों में दखल देने लगी।

सुभद्रा घर की छोटी बहू थी। इसलिए घर के सभी बड़े लोग उसका काफी ध्यान रखते थे। इस बात को उसने उनका प्यार नहीं समझ कर डरना मान लिया। वे कभी-कभी समाज में बदनामी होने की वजह से उसकी नाजायज मांग के सामने भी चुप रह जाया करते थे।

शुरू-शुरू में उसका पति चूँकि उस पर बुरी तरह आसक्त था इसलिए हर बात में उसका समर्थन करता था। पर गलत कार्यों का कब तक समर्थन किया जा सकता है! लेकिन वह उसके रूठ जाने के भय से कभी उसके सामने मुंह नहीं खोलता था।

इस बात को सुभद्रा ने अपने पति की कमजोरी मान लिया और वह उसके न चाहने पर भी सारे परिवार से अलग रहने के लिए दबाव देने लगी।

मनीष ने सुभद्रा को साफ शब्दों में कह दिया कि जब घर में हम दो ही भाई मां के साथ रहते हैं तो फिर अलग होने की क्या बात है? वैसे भी वह उन लोगों से अलग नहीं रह सकता। पर नारी के त्रिया चरित्र के आगे पुरुष हमेशा मात खाता आया है। मनीष को भी उसकी बात माननी पड़ी। लेकिन मनीष ने कह दिया कि वह परिवार से अलग रहने की बात नहीं कहेगा।

अर्जुन काफी संवेदनशील व्यक्ति था। उसने जब सुना कि उसकी भावज उन लोगों से अलग रहना चाहती है तो उसको झटका लगा। पर स्थिति इतनी गंभीर होती जा रही थी कि वह कुछ भी निर्णय करने में अपने को असमर्थ पा रहा था।

सुभद्रा की शादी को अभी दो साल भी नहीं हुए थे, पर वह परिवार से अलग हो जाने के लिए हर पल गुस्से में बिफरती रहती थी। एक दिन तो उसने यहां तक कह दिया कि यदि उसे परिवार से अलग नहीं किया गया तो वह जहर खा कर आत्महत्या कर लेगी। परिवार के सभी सदस्यों पर दहेज प्रताड़ना का आरोप लगा देगी।

अर्जुन ने जब यह सुना तो उसका पारा चढ़ गया। पर कानून से लड़ना नहीं चाहता था। सुभद्रा ने जो कहा, उसने वही किया। अब मनीष और अर्जुन दो अलग-अलग परिवारों के सदस्य थे।

आरती देवी को काफी कष्ट हुआ, पर वह बेचारी क्या कर सकती थीं। वह अपने बड़े बेटे के साथ रहने

लगीं, पर छोटे बेटे मनीष का मोह कभी-कभी उन्हें विचलित कर देता। एक दिन उन्होंने अधीर होकर मनीष को बुलाने के लिए अमित को भेजा।

मनीष घर के भीतर सो रहा था और आंगन में सुभद्रा कपड़ा धो रही थी। अमित जाकर वहां बोला—“चाची, चाची, दादी ने चाचा को बुलाया है।”

“भाग यहां से! क्यों आया है यहां? कोई नहीं जाएगा वहां।”

अमित डर कर भाग गया। उसने जाकर अपनी दादी को बता दिया। मां का दिल रो दिया। पर इस कष्ट को सहने के सिवा और कोई रास्ता भी तो नहीं था। मनीष के दिल में मां, भाई, भाभी और बच्चों के लिए प्यार की कोई कमी नहीं थी। पर वह पत्नी के डर से उनके पास फटकना भी नहीं चाहता था। पर धीरे-धीरे उसकी यह आदत बन गई और वह किसी की तरफ ध्यान नहीं देता था।

प्रसव का दर्द बढ़ रहा था। सुभद्रा को नर्सिंग होम में भर्ती करना था। मनीष अपने कार्यालय गया हुआ था। घर में कोई दूसरा सदस्य था भी नहीं जो उसे उस हालत में नर्सिंग होम ले जाता। अड़ोस-पड़ोस वालों से भी उसके संबंध कुछ खास मधुर नहीं थे जो उसे देखने आते। वह अपने किसी परिवार वाले को बुलाने का साहस नहीं कर पा रही थी।

मां तो मां ही होती है। वह यह तो जानती ही थी कि सुभद्रा को अस्पताल में भर्ती करना होगा, पर उसके व्यवहार से जाएं भी तो कैसे? इधर सुभद्रा जब दर्द से छटपटाने लगी तो आरती देवी अपनी बड़ी बहू के साथ उसके पास पहुंचीं। अर्जुन उस समय घर पर ही था। तुरंत सुभद्रा को नर्सिंग होम दाखिल कर दिया गया।

आपरेशन से सुभद्रा ने एक खुबसूरत बच्चे को जन्म दिया। मनीष भी वहां आ गया था। पर अपनी खुशी किससे बांटे! सब लोग मौन ही रह रहे थे। थोड़ी देर बाद मनीष को छोड़ कर सभी लोग वापस घर लौट आए।

बच्चे के जन्म के छठवें दिन उत्सव का आयोजन करना था। पूरे मुहल्ले को सुभद्रा ने न्योता पठाया पर अपनी ही सास और जिठानी को एक बार भी नहीं पूछा कि यह आयोजन कैसे होगा या उन लोगों को भी रहना है।

उस उत्सव में मनीष और सुभद्रा को बच्चे के साथ एक ही चौके पर मंगलाचार के लिए बैठना था जिसमें सुभद्रा के मैके का बाप या भाई उसको चुनरी ओढ़ा कर बच्चे को आशीर्वाद देता। सुभद्रा ने अपने पीहर खबर जरूर भिजवाई थी पर उसके पिता की तबियत अचानक खराब हो जाने से वह नहीं आ सके थे। भाई कोई था नहीं जो आता।

पंडित जी ने मंत्र पढ़ कर जब सुभद्रा के बाप या भाई को आकर चुनरी ओढ़ाने को बुलाया तो कोई नहीं आया। अब उसके बिना आगे की विधि रुक गई। पंडितजी जब दुबारा बोले तो सुभद्रा को अपना कोई भाई न होने का बहुत अफसोस हुआ और उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

अर्जुन अपने दरवाजे से देख रहा था। वह वहां से उठ कर आया और लाई गई चुनरी उसको उढ़ाते हुए कहा—“सुभद्रा को भले ही कोई भाई नहीं है लेकिन जेठ तो बड़ा भाई ही होता है। इसलिए आज से मैं ही इसका बड़ा भाई बन कर चुनरी उढ़ा कर बच्चे को आशीर्वाद देता हूँ।”

लोगों से भरे उस माहौल में जहां सुभद्रा को भाई न होने का अपमान झेलना पड़ रहा था, वहीं बच्चे को आशीर्वाद न मिलने का अपशकुन भी हो रहा था। लेकिन अर्जुन के चलते सब कुछ सही हो गया। अर्जुन के इस व्यवहार से जहां लोग वाह-वाह कर उठे, वहीं सुभद्रा का हृदय भी ग्लानि से भर उठा। उसके आंखों से पाश्चाताप के आंसू बह निकले। वह जेठ के पैरों पर गिर पड़ी। दोनों तरफ का मनोविकार दूर हो गया था। अब परिवार पुनः एक होने की कगार पर था।

# मां का अधिकार

पंडित अयोध्यानाथ का देहान्त हुआ तो सबने कहा, ईश्वर आदमी की ऐसी ही मौत दे। चार जवान बेटे थे, एक लड़की। चारों लड़कों के विवाह हो चुके थे, केवल लड़की क्वॉरी थी। सम्पत्ति भी काफी छोड़ी थी। एक पक्का मकान, दो बगीचे, कई हजार के गहने और बीस हजार नकद।

विधवा फूलमती को शोक तो हुआ और कई दिन तक बेहाल पड़ी रही, लेकिन जवान बेटों को सामने देखकर उसे ढाढ़स हुआ। चारों लड़के एक-से-एक सुशील, चारों बहुएँ एक-से-एक बढ़कर आज्ञाकारिणी। जब वह रात को लेटती, तो चारों बारी-बारी से उसके पाँव दबातीं; वह स्नान करके उठती, तो उसकी साड़ी छाँटती। सारा घर उसके इशारे पर चलता था।

बड़ा लड़का कामता एक दफ्तर में 50 रू. पर नौकर था, छोटा उमानाथ डाक्टरी पास कर चुका था और कहीं औषधालय खोलने की फिफ्र में था, तीसरा दयानाथ बी. ए. में फेल हो गया था और पत्रिकाओं में लेख लिखकर कुछ-न-कुछ कमा लेता था, चौथा सीतानाथ चारों में सबसे कुशाग्र बुद्धि और होनहार था और अबकी साल बी. ए. प्रथम श्रेणी में पास करके एम. ए. की तैयारी में लगा हुआ था। किसी लड़के में वह दुर्व्यसन, वह छैलापन, वह लुटाऊपन न था, जो माता-पिता को जलाता और कुल-मर्यादा को डुबाता है।

फूलमती घर की मालकिन थी। गोकि कुंजियाँ बड़ी बहू के पास रहती थीं – बुढ़िया में वह अधिकार-प्रेम न था, जो वृद्धजनों को कटु और कलहशील बना दिया करता है; किन्तु उसकी इच्छा के बिना कोई बालक मिठाई तक न मँगा सकता था।

संध्या हो गई थी। पंडित को मरे आज बारहवाँ दिन था। कल तेरहीं हैं। ब्रह्मभोज होगा। बिरादरी के लोग निमंत्रित होंगे। उसी की तैयारियाँ हो रही थीं। फूलमती अपनी कोठरी में बैठी देख रही थी, पल्लेदार बोरे में आटा लाकर रख रहे हैं। घी के टिन आ रहे हैं। शाक-भाजी के टोकरे, शक्कर की बोरियाँ, दही के मटके चले आ रहे हैं।

महापात्र के लिए दान की चीजें लाई गईं-बर्तन, कपड़े, पलंग, बिछावन, छाते, जूते, छड़ियाँ, लालटेन आदि; किन्तु फूलमती को कोई चीज नहीं दिखाई गई। नियमानुसार ये सब सामान उसके पास आने चाहिए थे। वह प्रत्येक वस्तु को देखती उसे पसंद करती, उसकी मात्रा में कमी-बेशी का फैसला करती; तब इन चीजों को भंडारे में रखा जाता।

क्यों उसे दिखाने और उसकी राय लेने की जरूरत नहीं समझी गई? अच्छा वह आटा तीन ही बोरा क्यों आया? उसने तो पाँच बोरों के लिए कहा था। घी भी पाँच ही कनस्तर है। उसने तो दस कनस्तर मंगवाए थे। इसी तरह शाक-भाजी, शक्कर, दही आदि में भी कमी की गई होगी। किसने उसके हुक्म में हस्तक्षेप किया? जब उसने एक बात तय कर दी, तब किसे उसको घटाने-बढ़ाने का अधिकार है?

आज चालीस वर्षों से घर के प्रत्येक मामले में फूलमती की बात सर्वमान्य थी। उसने सौ कहा तो सौ खर्च किए गए, एक कहा तो एक। किसी ने मीन-मेख न की। यहाँ तक कि पं. अयोध्यानाथ भी उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ न करते थे; पर आज उसकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से उसके हुक्म की उपेक्षा की जा रही है! इसे वह क्योंकर स्वीकार कर सकती?

‘हम लोगों की राय से।’

‘तो मेरी राय कोई चीज नहीं है?’

‘है क्यों नहीं; लेकिन अपना हानि-लाभ तो हम समझते हैं?’ फूलमती हक्की-बक्की होकर उसका मुँह ताकने लगी।

इस वाक्य का आशय उसकी समझ में न आया। अपना हानि-लाभ! अपने घर में हानि-लाभ की जिम्मेदार वह आप है। दूसरों को, चाहे वे उसके पेट के जन्मे पुत्र ही क्यों न हों, उसके कामों में हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार? यह लौंडा तो इस ढिठाई से जवाब दे रहा है, मानो घर उसी का है, उसी ने मर-मरकर गृहस्थी जोड़ी है, मैं तो गैर हूँ! जरा इसकी हेकड़ी तो देखो।

उसने तमतमाए हुए मुख से कहा मेरे हानि-लाभ के जिम्मेदार तुम नहीं हो। मुझे अख्तियार है, जो उचित समझूँ, वह करूँ। अभी जाकर दो बोरे आटा और पाँच टिन घी और लाओ और आगे के लिए खबरदार, जो किसी ने मेरी बात काटी। अपने विचार में उसने काफी तम्बीह कर दी थी। शायद इतनी कठोरता अनावश्यक थी। उसे अपनी उग्रता पर खेद हुआ। लड़के ही तो हैं, समझे होंगे कुछ किफायत करनी चाहिए। मुझसे इसलिए न पूछा होगा कि अम्मा तो खुद हरेक काम में किफायत करती हैं।

अगर इन्हें मालूम होता कि इस काम में मैं किफायत पसंद न करूँगी, तो कभी इन्हें मेरी उपेक्षा करने का साहस न होता। यद्यपि कामतानाथ अब भी उसी जगह खड़ा था और उसकी भावभंगी से ऐसा ज्ञात होता था कि इस आज्ञा का पालन करने के लिए वह बहुत उत्सुक नहीं, पर फूलमती निश्चिंत होकर अपनी कोठरी में चली गयी। इ

तनी तम्बीह पर भी किसी को अवज्ञा करने की सामर्थ्य हो सकती है, इसकी संभावना का ध्यान भी उसे न आया। पर ज्यों-ज्यों समय बीतने लगा, उस पर यह हकीकत खुलने लगी कि इस घर में अब उसकी वह हैसियत नहीं रही, जो दस-बारह दिन पहले थी। सम्बंधियों के यहाँ के नेवते में शक्कर, मिठाई, दही, अचार आदि आ रहे थे। बड़ी बहू इन वस्तुओं को स्वामिनी-भाव से सँभाल-सँभालकर रख रही थी। कोई भी उससे पूछने नहीं आता। बिरादरी के लोग जो कुछ पूछते हैं, कामतानाथ से या बड़ी बहू से।

कामतानाथ कहीं का बड़ा इंतजामकार है, रात-दिन भंग पिये पड़ा रहता हैं किसी तरह रो-धोकर दफ्तर चला जाता है। उसमें भी महीने में पंद्रह नागों से कम नहीं होते। वह तो कहो, साहब पंडितजी का लिहाज करता है, नहीं अब तक कभी का निकाल देता। और बड़ी बहू जैसी फूहड़ औरत भला इन सब बातों को क्या समझेगी! अपने कपड़े-लत्ते तक तो जतन से रख नहीं सकती, चली है गृहस्थी चलाने! भद होगी और क्या। सब मिलकर कुल की नाक कटवाएँगे।

वक्त पर कोई-न-कोई चीज कम हो जायेगी। इन कामों के लिए बड़ा अनुभव चाहिए। कोई चीज तो इतनी बन जाएगी कि मारी-मारी फिरेगा। कोई चीज इतनी कम बनेगी कि किसी पत्तल पर पहुँचेगी, किसी पर नहीं। आखिर इन सबों को हो क्या गया है! अच्छा, बहू तिजोरी क्यों खोल रही है? वह मेरी आज्ञा के बिना तिजोरी खोलनेवाली कौन होती है?

कुंजी उसके पास है अवश्य; लेकिन जब तक मैं रुपये न निकलवाऊँ, तिजोरी नहीं खुलती। आज तो इस तरह खोल रही है, मानो मैं कुछ हूँ ही नहीं। यह मुझसे न बर्दाश्त होगा वह झमककर उठी और बहू के पास जाकर कठोर स्वर में बोली- तिजोरी क्यों खोलती हो बहू, मैंने तो खोलने को नहीं कहा?

बड़ी बहू ने निस्संकोच भाव से उत्तर दिया-बाजार से सामान आया है, तो दाम न दिया जाएगा। ‘कौन चीज किस भाव में आई है और कितनी आई है, यह मुझे कुछ नहीं मालूम! जब तक हिसाब-किताब न हो जाए, रुपये कैसे दिये जाएँ?’

‘किसने किया?’

‘अब मैं क्या जानूँ किसने किया? जाकर मरदों से पूछो! मुझे हुक्म मिला, रुपये लाकर दे दो, रुपये लिये जाती हूँ।’

फूलमती खून का घूँट पीकर रह गई। इस वक्त बिगड़ने का अवसर न था। घर में मेहमान स्त्री-पुरुष भरे हुए थे। अगर इस वक्त उसने लड़कों को डाँटा, तो लोग यही कहेंगे कि इनके घर में पंडितजी के मरते ही फूट पड़ गई। दिल पर पत्थर रखकर फिर अपनी कोठरी में चली गयी। जब मेहमान विदा हो जायेंगे, तब वह एक-एक की खबर लेगी। तब देखेगी, कौन उसके सामने आता है और क्या कहता है।

इनकी सारी चौकड़ी भुला देगी। किन्तु कोठरी के एकांत में भी वह निश्चिन्त न बैठी थी। सारी परिस्थिति को गिद्ध दृष्टि से देख रही थी, कहाँ सत्कार का कौन-सा नियम भंग होता है, कहाँ मर्यादाओं की उपेक्षा की जाती है। भोज आरम्भ हो गया। सारी बिरादरी एक साथ पंगत में बैठा दी गई।

ऑंगन में मुश्किल से दो सौ आदमी बैठ सकते हैं। ये पाँच सौ आदमी इतनी-सी जगह में कैसे बैठ जायेंगे? क्या आदमी के ऊपर आदमी बिठाए जायेंगे? दो पंगतों में लोग बिठाए जाते तो क्या बुराई हो जाती? यही तो होता है कि बारह बजे की जगह भोज दो बजे समाप्त होता; मगर यहाँ तो सबको सोने की जल्दी पड़ी हुई है। किसी तरह यह बला सिर से टले और चैन से सोएं! लोग कितने सटकर बैठे हुए हैं कि किसी को हिलने की भी जगह नहीं। पत्तल एक-पर-एक रखे हुए हैं। पूरियां ठंडी हो गईं। लोग गरम-गरम माँग रहे हैं। मैदे की पूरियाँ ठंडी होकर चिमड़ी हो जाती हैं। इन्हें कौन खाएगा? रसोइए को कढ़ाव पर से न जाने क्यों उठा दिया गया? यही सब बातें नाक काटने की हैं।

सहसा शोर मचा, तरकारियों में नमक नहीं। बड़ी बहू जल्दी-जल्दी नमक पीसने लगी। फूलमती क्रोध के मारे ओ चबा रही थी, पर इस अवसर पर मुँह न खोल सकती थी। बोरे-भर नमक पिसा और पत्तलों पर डाला गया। इतने में फिर शोर मचा-पानी गरम है, ठंडा पानी लाओ! ठंडे पानी का कोई प्रबन्ध न था, बर्फ भी न मँगाई गई। आदमी बाजार दौड़ाया गया, मगर बाजार में इतनी रात गए बर्फ कहाँ? आदमी खाली हाथ लौट आया। मेहमानों को वही नल का गरम पानी पीना पड़ा।

फूलमती का बस चलता, तो लड़कों का मुँह नोच लेती। ऐसी छीछालेदर उसके घर में कभी न हुई थी। उस पर सब मालिक बनने के लिए मरते हैं। बर्फ जैसी जरूरी चीज मँगवाने की भी किसी को सुधि न थी! सुधि कहाँ से रहे-जब किसी को गप लड़ाने से फुर्सत न मिले। मेहमान अपने दिल में क्या कहेंगे कि चले हैं बिरादरी को भोज देने और घर में बर्फ तक नहीं! अच्छा, फिर यह हलचल क्यों मच गई? अरे, लोग पंगत से उठे जा रहे हैं।

क्या मामला है? फूलमती उदासीन न रह सकी। कोठरी से निकलकर बरामदे में आयी और कामतानाथ से पूछा-क्या बात हो गई

लल्ला? लोग उठे क्यों जा रहे हैं? कामता ने कोई जवाब न दिया। वहाँ से खिसक गया। फूलमती झुँझलाकर रह गई।

सहसा कहारिन मिल गई। फूलमती ने उससे भी यह प्रश्न किया। मालूम हुआ, किसी के शोरबे में मरी हुई चुहिया निकल आई। फूलमती चित्रलिखित-सी वहीं खड़ी रह गई।

भीतर ऐसा उबाल उठा कि दीवार से सिर टकरा ले! अभागे भोज का प्रबन्ध करने चले थे। इस फूहड़पन की कोई हद है, कितने आदमियों का धर्म सत्यानाश हो गया! फिर पंगत क्यों न उठ जाए? आँखों से देखकर अपना धर्म कौन गँवाएगा? हा! सारा किया-धरा मिट्टी में मिल गया। सैकड़ों रुपये पर पानी फिर गया! बदनामी हुई वह अलगा।

मेहमान उठ चुके थे। पत्तलों पर खाना ज्यों-का-त्यों पड़ा हुआ था। चारों लड़के ऑंगन में लज्जित खड़े थे। एक दूसरे को इलजाम दे रहा था। बड़ी बहू अपनी देवरानियों पर बिगड़ रही थी। देवरानियाँ सारा दोष कुमुद के सिर डालती थी। कुमुद खड़ी रो रही थी।

उसी वक्त फूलमती झल्लाई हुई आकर बोली-मुँह में कालिख लगी कि नहीं या अभी कुछ कसर बाकी हैं? डूब मरो, सब-के-सब जाकर चिल्लू-भर पानी में! शहर में कहीं मुँह दिखाने लायक भी नहीं रहे। किसी लड़के ने जवाब न दिया।

फूलमती और भी प्रचंड होकर बोली-तुम लोगों को क्या? किसी को शर्म-हया तो है नहीं। आत्मा तो उनकी रो रही है, जिन्होंने अपनी जिन्दगी घर की मरजाद बनाने में खराब कर दी। उनकी पवित्र आत्मा को तुमने यों कलंकित किया? शहर में थुड़ी-थुड़ी हो रही है। अब कोई तुम्हारे द्वार पर पेशाब करने तो आएगा नहीं!

कामतानाथ कुछ देर तक तो चुपचाप खड़ा सुनता रहा। आखिर झुंझला कर बोला-अच्छा, अब चुप रहो अम्माँ। भूल हुई, हम सब मानते हैं, बड़ी भंयकर भूल हुई, लेकिन अब क्या उसके लिए घर के प्राणियों को हलाल-कर डालोगी? सभी से भूलें होती हैं। आदमी पछताकर रह जाता है। किसी की जान तो नहीं मारी जाती?

बड़ी बहू ने अपनी सफाई दी-हम क्या जानते थे कि बीबी कुमुद से इतना-सा काम भी न होगा। इन्हें चाहिए था कि देखकर तरकारी कढ़ाव में डालतीं। टोकरी उठाकर कढ़ाव में डाल दी! हमारा क्या दोष! कामतानाथ ने पत्नी को डाँटा-इसमें न कुमुद का कसूर है, न तुम्हारा, न मेरा। संयोग की बात है। बदनामी भाग में लिखी थी, वह हुई। इतने बड़े भोज में एक-एक मुट्ठी तरकारी कढ़ाव में नहीं डाली जाती! टोकरे-के-टोकरे उड़ेल दिए जाते हैं। कभी-कभी ऐसी दुर्घटना होती है। पर इसमें कैसी जग-हँसाई और कैसी नक-कटाई। तुम खामखाह जले पर नमक छिड़कती हो!

फूलमती ने दांत पीसकर कहा- शरमाते तो नहीं, उलटे और बेहयाई की बातें करते हो। कामतानाथ ने निःसंकोच होकर कहा-शरमाऊँ क्यों, किसी की चोरी की हैं? चीनी में चींटे और आटे में घुन, यह नहीं देखे जाते। पहले हमारी निगाह न पड़ी, बस, यहीं बात बिगड़ गई। नहीं, चुपके से चुहिया निकालकर फेंक देते। किसी को खबर भी न होती।

फूलमती ने चकित होकर कहा-क्या कहता है, मरी चुहिया खिलाकर सबका धर्म बिगाड़ देता? कामता हँसकर बोला-क्या पुराने जमाने की बातें करती हो अम्माँ। इन बातों से धर्म नहीं जाता? यह धर्मात्मा लोग जो पत्तल पर से उठ गए हैं, इनमें से कौन है, जो भेड़-बकरी का मांस न खाता हो? तालाब के कछुए और घोंघे तक तो किसी से बचते नहीं। जरा-सी चुहिया में क्या रखा था!

फूलमती को ऐसा प्रतीत हुआ कि अब प्रलय आने में बहुत देर नहीं है। जब पढ़े-लिखे आदमियों के मन में ऐसे अधार्मिक भाव आने लगे, तो फिर धर्म की भगवान ही रक्षा करें। अपना-सा मुँह लेकर चली गयी। आज वह अपने सभी अधिकारों से अपने ही घर में वंचित महसूस कर रही थी। अब उसे लग रहा था कि पति के न होने की वजह से उसके ही पेट के जायों ने उसके समस्त अधिकारों को हड़प लिया है। पर अब तो पहले वाली बात रही नहीं अब वह सोच कर भी क्या कर सकती है।

# चैल

चैल एक खूबसूरत पहाड़ी स्थान है, जो हिमाचल प्रदेश के सोलन ज़िले में स्थित है। यहाँ का क्रिकेट और पोलो मैदान भी बहुत प्रसिद्ध है। चैल का वन्यजीव अभ्यारण्य भी बहुत खास है, जो वन्यजीव प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस अभ्यारण्य में वन्यजीवों के साथ ही विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे भी पाये जाते हैं। लॉर्ड किच्चर के आदेश अनुसार पटियाला के महाराजा, अधिराज भूपिंदर सिंह को शिमला से निर्वासित कर दिये गए, इसका बदला लेने के लिए उन्होंने चैल को अपनी गीष्मकालीन राजधानी बना कर यहाँ सुंदर चैल महल का निर्माण किया।

चैल महल का निर्माण 1891 में हुआ और यह चैल की शाही वीरासत है। समुद्र तल से 2,226 मीटर ऊँची और सध टिब पहाड़ी पर स्थित चैल हिमाचल प्रदेश का बहुत ही सुन्दर स्थान है।

लॉर्ड किच्चर के आदेश के अनुसार पटियाला के महाराजा, अधिराज भूपिंदर सिंह को शिमला से निर्वासित कर दिया



गया था। इसका बदला लेने के लिए भूपिन्दर सिंह ने चैल को अपनी गीष्मकालीन राजधानी बनाया और यहाँ सुंदर चैल महल का निर्माण करवाया।

चैल महल का निर्माण वर्ष 1891 में हुआ था और यह चैल की शाही वीरासत है। इसके अतिरिक्त चैल का वन्यजीव अभ्यारण्य, जहाँ कई प्रकार के पेड़ पौधे पाए जाते हैं, चैल के प्रमुख आकर्षण का केंद्र है।

इस अभ्यारण्य में कई वन्यजीव पाये जाते हैं, जैसे- चैल का क्रिकेट और पोलो मैदान भी बहुत प्रसिद्ध है, जो समुद्री तल से 2,444 मीटर ऊँचा है। यह दुनिया का सबसे अधिक

ऊँचाई पर स्थित क्रिकेट मैदान है। अब यह चैल सैन्य पाठशाला के अंतर्गत है। गुरुद्वारा साहिब, काली का टिब्बा, महाराजा महल यहाँ के प्रमुख पर्यटक स्थल है। यह ट्रेकिंग और फिशिंग के लिए भी उत्तम स्थान है।

कब और कैसे जाएँ — इसके लिए आप निम्न से कोई मार्ग अपना सकते हैं

चैल जाने के लिए सड़क मार्ग, रेल मार्ग और हवाई मार्ग की सेवा उपलब्ध है। इस स्थान को देखने का सबसे बढ़िया समय मार्च और मई के बीच है, जब यहाँ सर्दी होती है। यहाँ का मधुर वातावरण गर्मियों में भी सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। गुरुद्वारा साहिब, काली का टिब्बा, महाराजा महल यहाँ के प्रमुख पर्यटक स्थल है।

यह ट्रेकिंग और फिशिंग के लिए उत्तम स्थान है। चैल जाने के लिए रोड मार्ग, रेल मार्ग, हवाई मार्ग की सेवा उपलब्ध है। इस स्थान को देखने का सबसे बढ़िया समय मार्च और मई के बीच है।

— नितेश कुमार

## गहरी चोट का असर

रीता अपने कमरे में चुपचाप बैठी अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी। दीवाल पर लगी घड़ी ने रात के नौ बजने के संगीतमय स्वर से पूरे कमरे को गुंजायमान कर दिया। घड़ी की आवाज सुन कर रीता को होश आया कि अभी तक उसका पति घर नहीं आया है। इसके पहले वह सात बजे के पहले ही आ जाया करता था। हालांकि उसके घर आ जाने पर वह कभी सीधे मुंह बात तक नहीं करती थी।

रीता ने बी. ए. किया था। पर शिक्षा से उसका दूर-दूर तक नाता नहीं था। पढ़ना क्या था, नकल के जमाने में किताबें खोल कर कर परीक्षा पास कर ली थी। यह संयोग ही था कि गोरे रंग और छरहरे बदन पर बड़ी-बड़ी आंखों से वह शीघ्र ही किसी का मन मोह लिया करती थी। यही कारण था कि उसका यह अहम उसे अपने पति के करीब जाने से रोक दिया करता था। फिर भी वह अपने स्वभाव में किसी तरह का परिवर्तन नहीं करना चाहती थी।

शादी की मुंह दिखाई के समय ही यदि उसे अपने परिवार की मर्यादा का ख्याल नहीं होता तो राकेश को अनफिट करार दे देती। उसकी इसी हलौंठा ने उसे शादी के बाद भी सिर्फ न अपने पति से बल्कि पूरे परिवार के किसी भी सदस्य से उसका व्यवहार मधुर न हो सका।

नतीजा यह हुआ कि वह चिड़चिड़ी हो गई। पति और पत्नी में तकरार होने लगी। पूरे घर का वातावरण तनावपूर्ण रहने लगा। राकेश भी हमेशा चिंताग्रस्त रहा करता। उसकी इसी चिंता को लक्ष्य करते हुए उसके पिता ने कहा-“बेटा, तुम्हारी बहू का दिमाग बड़ा तेज है। उससे निभना बड़ा कठिन कार्य है। परिवार में तुम्हारा एक पैसा भी खर्च करना कलह उत्पन्न करने वाला है। बेहतर तो यही होगा तुम रोज-रोज की कलह को दूर करने के लिए बहू को लेकर दूर रहो।”

“पर पिताजी, मुझे ऑफिस स्कूटर से जाने में केवल एक ही घंटा लगता है। फिर आप लोगों को छोड़ कर वहां रहना क्या ठीक होगा?” राकेश ने अपना विरोध प्रकट करते हुए कहा।

“बात ऐसी है बेटा, मनुष्य को मां-बाप और गुरुजनों का ख्याल तो रखना ही चाहिए। पर तुम भी तो विवश हो... पत्नी को भी कैसे छोड़ोगे।”

“लेकिन वैसी पत्नी को क्यों ढोना जो दिन-रात घर में कलह छाने रहे।”

“कलह या प्रीति तो ईश्वर ही लिख कर भेजता है। हम लोगों को कौन सौ-पचास साल जीना है जो रीता को तुम दुख दोगे? मेरा कहना मानो और उसे जहां काम करते हो, वहीं कोई डेरा लेकर रखो।” बाप ने अधिकारपूर्ण लहजे में राकेश को समझाया।

मां बाप को ही धरती का स्वर्ग मानने वाले पुत्र को भला यह कहां अच्छा लगता कि अनावश्यक रूप में वह सिर्फ पत्नी के लिए उन्हें छोड़ कर अलग घर लेकर रहे। बाबूजी की बातें सुन कर और भीतर घुसते ही मां को खाना बनाते देख कर उसका खून खौल उठा। वह अपने कमरे की तरफ बढ़ा तो देखा कि रीता कुर्सी पर बैठी कोई किताब पढ़ रही है।

राकेश का गुस्सा तो रोके नहीं रुक रहा था। पर ऐसी मुंहजोर पत्नी को कैसे समझाए कि तुम चुप भी हो

जाओ। शादी के बाद से आज तक रीता के सौंदर्य पर मुग्ध रहने वाला पति राकेश भला पत्नी को डांटने का दुस्साहस कैसे कर सकता था! मां को खाना बनाते देख कर उसे कष्ट तो हो ही रहा था, पर रीता के सामने पहुंचने पर अपने को असमर्थ पा रहा था। दूसरी बात यह थी कि रात भी कुछ ज्यादा ही हो चुकी थी।

इस समय रीता को कुछ भी बोलना उचित नहीं समझा इसलिए चुप ही रह गया। रात को यदि रीता को कुछ बोलता तो वह भी कहां मानने वाली थी। वह उसी समय चिल्लाना शुरू कर देती। इतनी रात को चिल्ल-पों सुनकर पड़ोसी भी बेवजह परेशान होते।

मां को मोतियाबिंद के चलते कम ही दिखाई देता था। फिर भी वह रीता के खाना न बनाने की वजह से खुद ही खाना बनाने चल पड़ी थी। बेटा और पति भूखे सो रहें, यह उसको गंवारा नहीं था। पानी का नल चौके से कुछ दूरी पर था। सब्जी में पानी डालने के लिए वह नल से पानी लाने के लिए चल पड़ी। ढिबरी की धीमी लौ में जैसे ही उसने आगे कदम बढ़ाया कि सामने पड़ी लकड़ी में उसका पैर टकरा गया और वह धड़ाम से गिर पड़ी।

मां के मुंह से एक चीख निकल पड़ी। चीख सुन कर राकेश दौड़ा हुआ आया। मां को चोट लगने से बेटे को काफी दुख हुआ और रीता पर काफी गुस्सा भी आया। लेकिन उसने इस भय से चुप रहने में भलाई समझी कि यदि वह रीता को कुछ कहेगा तो वह जल जाने की धमकी देने लगेगी।

पति और बेटे का मुंह देखकर राकेश की मां ने बस इतना ही कहा कि उसे कुछ खास चोट नहीं आई है। रीता आवाज सुन कर आई तो थी पर वह मां के द्वारा खास चोट नहीं आई है, कहना सुन कर कुछ भुनभुनाते हुए वहां से चली गई। पूरे परिवार के भीतर एक गुप्त तनाव व्याप्त हो गया।

रात में सबने थोड़ा बहुत ही खाया पर रीता ने वह भी कुछ नहीं खाया। पूरी रात में राकेश और रीता में कोई बातचीत नहीं हो सकी। इस बात का रीता को बहुत अधिक मलाल था।

रात तो बीत गई। पर सुबह होते ही रीता का बोलना चालू हो गया। रात की बातों को उसने रंग देना शुरू कर दिया। वह आंगन में जोर-जोर से बोल रही थी—“यह बुढ़िया सबको खा कर ही मरेगी। मैं कब खाना नहीं बनाती जो यह रोज शाम होते ही रसोई में घुस जाती है। यह मुझे अपने बेटे से मार खिलाने के लिए ही यह नाटक कर रही है। ऐसी सास से तो बिना सास के ही रहना अच्छा है। मेरी किस्मत फूटी थी जो ऐसे घर में आ गई...”

रीता का जोर से भकभकाना सुन कर राकेश की नींद खुल गई। वह और चुप नहीं रह सकता था इसलिए वह उसे डाटते हुए चुप हो जाने के लिए कहा। पर रीता पर तो जैसे भूत सवार था। वह और जोर-जोर से चिल्लाने लगी। सुबह-सुबह उसका चिल्लाना सुन कर पड़ोस की कुछ महिलाएं एवं बच्चे खड़े हो कर तमाशा देखने लगे।

पड़ोसियों के सामने अपनी बात को न मानते देख कर राकेश भी अपने को नहीं संभाल पा रहा था। इधर राकेश का गुस्सा बढ़ता जाता था तो उधर रीता का किसी फटे बांस की तरह चिल्लाना भी थमने वाला नहीं था। राकेश के बार-बार मना करने के बाद भी रीता चुप होने का नाम नहीं ले रही थी। तभी उसका एक जोरदार हाथ हवा में लहराया और रीता के गाल पर जा लगा।

घर के बाहर लोगों को खड़ा देख कर रीता को भारी अपमान महसूस हुआ तथा उसका पारा भी सांतवें आसमान पर जा पहुंचा। नकचढ़ी रीता को राकेश ने जीवन में पहली बार मारा था, इसलिए वह अपने विवेक में भी कैसे रहती। वह राकेश के तमाचे से ऐसी तिलमिलाई कि उसका उचित जवाब देने के लिए बेचैन हो उठी। विवेकशून्य व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। रीता की भी स्थिति वही थी।

रीता को जीवन में पहली बार उस पति से पड़ोसियों के सामने अपमानित होना पड़ा था, जिसकी नकेल वह अपने हाथ में रखने के लिए मशहूर थी। उसने आव देखा न ताव, सामने पड़े सील-बट्टे का बट्टा उठा कर राकेश पर ऐसी फेंकी कि वह सीधे राकेश के सिर पर जा लगा।

राकेश तो राकेश उसके सामने खड़े लोग भी इस बात की कल्पना नहीं कर पाए थे कि पत्नी भी पति के ऊपर हाथ उठाएगी। चोट भी भारी भरकम पत्थर से लगी थी। नतीजा यह हुआ कि वह संभल नहीं सका और धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

तमाशाबीनों में से तो कुछ डर कर भाग खड़े हुए। कुछेक ने हिम्मत कर के राकेश को पकड़ा। माथे में गंभीर चोट लगने की वजह से वह अज्ञान हो गया था। बूढ़ा बाप छाती पीटने लगा।

रीता ने अभी तक नीचे नहीं देखा था। अभी तक वह बोलने में इतना पागल हो रही थी कि उसकी नजर नीचे नहीं उतर पा रही थी। वह तो अब और चिल्लाने लगी थी। गांव के ही एक नवयुवक रीता को इतने पर भी चुप नहीं होने पर इतनी जोर से डांटा कि उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने एक भद्दी गाली के साथ रीता को मार डालने के धमकी दे डाली।

इस बार रीता का ध्यान नीचे गया जहां राकेश के सिर से बहते खून ने आसपास की धरती लाल कर दी थी। उसे देख कर रीता को काटो तो खून नहीं।

“हाय! मैं क्या कर बैठी! उसके हृदय में हाहाकर मच गया। उसने राकेश की तरफ जाने लिए कदम बढ़ाया ही था कि लोगों ने उसे पकड़ लिया। लोगों को यह संदेह हो गया कि कहीं यह कुछ और अनिष्ट न कर बैठे। लोगों द्वारा पकड़ लिए जाने पर उसने हिस्टीरियाई आवाज में चिल्लाना शुरू कर दिया।

उसके मुंह से हाय मैंने यह क्या कर डाला, अपने ही पति को मार डाला कि जगह घबड़ाहट एवं चिंता में उसे क्या बोलना है इसका ज्ञान नहीं रह गया था। लोगों ने सोचा कि कहीं गुस्से में यह कुछ और अनिष्ट न कर बैठे। शायद यह क्रोध में पागल हो गई है और इस समय यह कोई और भयानक कांड भी कर सकती है। इसलिए कोई उसे राकेश के नजदीक नहीं पहुंचने दे रहा था।

रीता ने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि वह अपने गुस्से में ऐसा भी कांड कर बैठेगी जो उसे कहीं का नहीं रखेगा। इस समय उसके मन में अपने कृत्य पर गहरा दुःख था, पर लोग उसे खूनी समझ रहे थे। वह इस नाजुक दौर में पति के पास भी नहीं जा पा रही थी। लोगों का ध्यान राकेश की तरफ था। अस्पताल पहुंचाने की तैयारी की जाने लगी। इधर लोग अभी रास्ते में ही थे कि मां का भय, अपमान और दुख के कारण हार्ट फेल हो गया।

अस्पताल में थोड़ी चिकित्सा के उपरांत ही राकेश को होश आ गया। पर उसकी स्मृति चली गई। उसने किसी को भी पहचानने से इंकार कर दिया। बाप के मुंह से भी रुलाई फूट पड़ी। जवान बेटा उसे पहचान नहीं रहा है। पत्नी तो सुखदायी होती है पर यह क्या हो गया। वह अस्पताल में पागलों की तरह हरकत कर रहे थे कि कुछ लोग वहां आ पहुंचे। वे राकेश के पिता को घर लेकर आने लगे।

राकेश की हालत देख कर तो उस बूढ़े बाप को रोना आया था पर घर आने पर कफन में लिपटी पत्नी को देख कर वह सन्न रह गया।

रीता के बहुत अधिक छटपटाने एवं अंटशंट बकने की वजह से लोगों ने उसे एक कमरे में जबरदस्ती बंद कर दिया था। उसे अब कमरे से आजाद कर दिया गया। वह सामने सास की लाश देखकर एक बार कांप गई। उसे होश नहीं रहा कि वह क्या करे? वह सास के कदमों पर गिर पड़ी। बड़ी रोई उसका गरूर गल गया था। उसके बार-बार माफी मांगने पर भी अब उसे माफ कौन करता! वह तो दुनिया ही छोड़ चली थी।

जब होश आया तो वह राकेश को देखने अस्पताल की ओर भागी। रास्ते में गांव के बच्चों ने उस पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। दौड़ते हुए कई बार साड़ी में उलझ कर गिर पड़ती। पर वह बदहवास सी अस्पताल में राकेश को देखते ही उसके कदमों पर गिर कर माफी मांगने लगी। पर राकेश तो उसे पहचान ही नहीं रहा था\*

बार-बार माफी मांगने पर राकेश ने कहा-“ये मेम साहब! यह आप क्या कर रही हैं? आप कौन हैं और हमसे माफी क्यों मांग रही हैं?”

“मैं, मैं...क्या तुम मुझे पहचानना भी नहीं चाहते ... क्या तुम मेरी गलतियों को माफ नहीं करोगे...?’ और न जाने क्या-क्या बकती रही।

तभी सामने से नर्स ने प्रवेश किया और राकेश को परेशान करते देख कर रीता के पास पहुंची। वह बोली- “आप क्या कर रही हैं? जानती नहीं, सिर में चोट लगने की वजह से यह किसी सगे-संबंधी को भी पहचान नहीं पाएगा। इसकी स्मृति चली गई है।

“तुम कौन हो ? क्या तुम जानती नहीं हो इसकी हालत इसकी पत्नी ने ही की है। औरत नहीं, वह डायन है\* डायन भी सात घर छोड़ कर अपना जादू चलाती है, पर इसकी औरत तो...।”

रीता बुक्का फाड़कर रो उठी- “मुझे जला दो, मैंने ही वह पाप किया है। मेरी वजह से पति की स्मृति चली गई है...।” नाना प्रकार के उसके प्रलापों से पूरा अस्पताल आक्रांत हो उठा। बाद में कई लोगों ने उसे पकड़ कर अस्पताल परिसर से बाहर निकाला।

रीता का पश्चाताप देख कर राकेश के बाप ने तो उसे घर में रहने की अनुमति दे दी पर वह घर अब पहले का घर नहीं था। राकेश पति होते हुए भी रीता की छाया से दूर रहना चाहता था। उसे पिछली बातें अब तो याद ही नहीं थी इसलिए वह रीता को पत्नी मानने को तैयार नहीं था। छत तो एक ही थी, पर वह उन तीन जीवों के लिए किसी कैदखाने से कम नहीं था।

राकेश के बाप ने भले ही रीता को माफ कर दिया था पर वह यह सदमा बहुत दिनों तक नहीं झेल पाए\* साल भर के भीतर ही उनकी ईहलीला भी समाप्त हो गई। राकेश की स्मृति वापस लाने के लिए रीता ने न किसी व्रत पूजा पाठ को छोड़ा, न ही दवा दारू की ही कमी की। जिसने जो बताया, वही उसने किया पर कोई लाभ नहीं होता था।

इस घटना को बीते हुए सात साल बीत गए। रीता के अपराधबोध ने उसकी कंचन काया को कौड़ी के मोल कर डाला था। उसे समाज का हर आदमी नफरत की दृष्टि से देखता। पति को यह याद नहीं था कि वह उसकी पत्नी थी। हर जगह से दुत्तकार सहने के अलावा रीता के लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं था जो राकेश को छोड़ देती।

पर दुखों को झेलते हुए रीता ने अब तक बहुत प्रायश्चित्त कर लिया था। भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं है, कहावत चरितार्थ हो गई उस दिन जब रीता स्वयं उसी आंगन में फिसल कर गिर पड़ी। यह भी एक संयोग ही था कि वह सील बट्टा भी वहीं रखा हुआ था।

रीता का सर सील बट्टे पर पड़ा और उसे काफी गहरी चोट आई। उसके मुंह से एक चीख निकली जिसे सुन कर राकेश दौड़ कर बाहर से आंगन में आया। रीता का सर फूट गया था और माथे से बह रहे खून से फिर वहां के आंगन की धरती लाल हो रही थी।

खून देख कर राकेश के मुंह से बड़ी भयानक चीख निकली और वह गिर कर बेहोश हो गया। पड़ोस के लोगों ने रीता को संभाल लिया था। उसके माथे पर पट्टी बांध दी गई थी। थोड़ी देर बाद राकेश को होश आया। उसने सबसे पहले ‘मां’ कहकर पुकारा। फिर धीरे-धीरे अपनी आंखें खोलीं और उसकी खो गई स्मृति फिर से वापस मिल गई थी।

उसने चेतना में आते ही रीता से पूछा-“सील बट्टा तो तुमने मुझ पर चलाया था पर चोट तुम्हें कैसे लग गई?

रीता अपने सिर में लगी गहरी चोट का सारा दर्द भुल कर राकेश के गले जा लगी। उसका प्रायश्चित्त सफल हो गया था। तभी तो उसके पति की सात बरस पहले खोई स्मृति आज वापस मिल गई थी।

— विकास कुमार

छप-छप पानी में सब कूदें  
थप-थप करके बनें घरोंदें,  
टुन्नु-मुन्नु ने कागज की  
रंग-रंगीली नाव चलाई।  
रिमझिम-रिमझिम कदम ताल से  
रंग लुटाती वर्षा आई।

उमड़-धुमड़ कर बादल उमड़े  
सनन्-सनन् चलती पुरवाई,  
रिमझीम-रिमझीम कदम ताल से  
रंग लुटाती वर्षा आई।



बरसा की घटाये, बरखा बनके छाए,  
हरी-भरी धरती सुन्दर, सबके मन को लुभाए,  
इस मौसम को छोड़ कर, बहारे भला कहा जाये,  
सतरंगी समाओं से भला, पीछा कैसे छुड़ाये,

प्यासी सुखी धरती पर, जान छिड़क सी जाये,  
सावन की घटाये, बरखा बनके छाए,  
तेरे आ जाने से देखो, मस्ती मन में छाए,  
जीवो को नया जीवन देकर, सबकी प्यास बुझाये,

## बरखा बहार

बाग-बगीच लगे महकने  
मोर ख़ुशी से लगे थिरकने,  
झूमें-चहके पंछी सारे  
कोयल कूक-कूक मुस्काई।  
रिमझीम-रिमझीम कदम ताल से  
रंग लुटाती वर्षा आई।

हवाओ में भी महक है, जिसमे खींचे चले जाये,  
बागो में यौवन सी है, मन मचला सा जाये,  
सुन्दरता तेरी इतनी है, चंदा भी शरमा जाये,  
आया ऐसा दिन आज है, फिर न मिल न पाए,

तन की गर्मी को हर कर, शीतलता सी दे जाये,  
सूखे बाग बगीचों को, हरियाली का तोहफा दे जाये,  
चारो ओर हरियाली है, कैसे न सदके जाय  
सावन की घटाये, बरखा बनके छाए,

कल-कल छल-छल नदिया उमड़ी  
भर गए सारे ताल-तलाई,  
रून झुन बैल चले खेतों में  
मिट्टी की खुशबू मन भाई।

— सोनम



## मालदा मंडल में स्थित पौराणिक प्राचीन नगरी चंपा, वर्तमान में भागलपुर में स्थित कुछ ऐतिहासिक महत्व की इमारतें

बिहार में स्थित भागलपुर जिसे प्राचीन काल में चंपा के नाम से जाना जाता था, महान् पराक्रमी और शूरवीर कर्ण की राजधानी मानी जाती है। ईसा पूर्व 5वीं सदी में भागलपुर को 'चंपावती' के नाम से जाना जाता था। प्रसिद्ध तीर्थयात्री फाहयान ने चंपा की यात्रा की थी तथा इसके वैभव का उल्लेख किया है। ह्वेन त्सांग ने चंपा को 'चेनपो' नाम से वर्णित किया है। यह बिहार के मैदानी क्षेत्र के आखिरी सिरे और बिहार-झारखंड के कैमूर पहाड़ी का मिलन स्थल पर स्थित है। प्राचीन समय में यह नगरी हाथीदाँत, शीशे के शिल्प आदि सामान के लिए बहुत प्रसिद्ध थी। गंगा नदी के तट पर स्थित होने के कारण चंपा नगरी आर्थिक व्यापारिक केन्द्रों से जुड़ी हुई थी। महाजनपद युग में यह अंग महाजनपद की राजधानी हुआ करती थी। चंपा एक विकसित शिल्प-व्यापारिक नगरी थी। यहाँ का रेशमी वस्त्र व्यवसाय बहुत प्रसिद्ध था। भगवान बुद्ध और भगवान महावीरके प्रचार का यह प्रमुख केन्द्र थी। जैन तीर्थंकर वसुपूज्य की यह जन्मस्थली थी।



मालदा मंडल के साहिबगंज स्टेशन में आयोजित आधुनिकता -पर्यावरण की चुनौती  
विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी के कुछ दृश्य

